



ISSN: 2394-7519

IJSR 2022; 8(5): 235-237

© 2022 IJSR

www.anantajournal.com

Received: 25-07-2022

Accepted: 27-08-2022

डॉ. निशा गोयल

एसोसिएट प्रोफेसर, कालिन्दी
कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय,
दिल्ली, भारत

शुकनासोपदेश एवं वर्तमान परिप्रेक्ष्य

डॉ. निशा गोयल

DOI: <https://doi.org/10.22271/23947519.2022.v8.i5d.1895>

सारांश

वर्तमान युग भौतिकवादी एवं अर्थप्रधान युग है, जहाँ सर्वत्र 'अर्थ' की ही महिमा दृष्टिगत होती है। यत्र तत्र सर्वत्र 'टका कर्म टका धर्म' की ही हुँकार सुनाई देती है। इस अर्थप्रधान युग में व्यक्ति के सभी गुण गौण होकर रह गए हैं। व्यक्ति केवल प्रतिस्पर्धा की रेस में भाग-भाग कर अपने जीवन के वास्तविक लक्ष्य को भुला बैठा है।

शुकनासोपदेश बाणभट्ट विरचित कादम्बरी का एक भाग है, जिसमें मंत्री शुकनास द्वारा युवराज चन्द्रापीड़ को भविष्य में आने वाली सभी समस्याओं से अवगत कराया गया है और उसके द्वारा निर्विघ्नरूपेण युवराजपद एवं राजपद के निर्वहन हेतु सभी समस्याओं का समाधान भी प्रस्तुत किया गया है।

कूटशब्द: शुकनासोपदेश, शुकनास, चन्द्रापीड़, युवावर्ग, लक्ष्मी

प्रस्तावना

वर्तमान युग भौतिकवादी एवं अर्थप्रधान युग है, जहाँ सर्वत्र 'अर्थ' की ही महिमा दृष्टिगत होती है। यत्र तत्र सर्वत्र 'टका कर्म टका धर्म' की ही हुँकार सुनाई देती है। इस अर्थप्रधान युग में व्यक्ति के सभी गुण गौण होकर रह गए हैं। व्यक्ति केवल प्रतिस्पर्धा की रेस में भाग-भाग कर अपने जीवन के वास्तविक लक्ष्य को भुला बैठा है।

इस हाहाकारमय, चीत्कारमय, मानव मूल्यों से विहीन समय में हमारे संस्कृत साहित्य के अमूल्य ग्रन्थ विशिष्ट सहायक बनकर उपस्थित होते हैं। ये ग्रन्थ रोती-सिसकती, दम तोड़ती मानवता को एवं मानव को विशिष्ट सम्बल प्रदान करने का कार्य करते हैं। शुकनासोपदेश इसी शृंखला का महत्वपूर्ण ग्रन्थ है।

शुकनासोपदेश बाणभट्ट विरचित कादम्बरी का एक भाग है, जिसमें मंत्री शुकनास द्वारा युवराज चन्द्रापीड़ को भविष्य में आने वाली सभी समस्याओं से अवगत कराया गया है और उसके द्वारा निर्विघ्नरूपेण युवराजपद एवं राजपद के निर्वहन हेतु सभी समस्याओं का समाधान भी प्रस्तुत किया गया है।

Corresponding Author:

डॉ. निशा गोयल

एसोसिएट प्रोफेसर, कालिन्दी
कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय,
दिल्ली, भारत

शुकनासोपदेश वर्तमान युग में प्रायः प्रत्येक उस युवक के लिए महत्वपूर्ण है, जो अपने जीवन का प्रारम्भ करने जा रहे हैं। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में पदार्पण करते हुए अनन्त समस्याएँ मुख बाएँ आ खड़ी होती हैं (खोले) शुकनासोपदेश में मंत्री शुकनास युवराज चन्द्रापीड़ को समाधान बताते हुए प्रत्येक युवा को दिशानिर्देश कर जाते हैं।

शुकनासोपदेश के प्रारम्भ में ही युवावस्था के दोष बताते हुए मंत्री शुकनास युवावस्था को वह अवस्था बताते हैं, जो व्यक्ति को उसके वास्तविक लक्ष्य से भ्रमित कर देती है। यथा-

अपहरति च सकलमतिमलिनमप्यन्धकारमिव दोषजातं प्रदोषसमयनिशाकर इव गुरुपदेशः। प्रशमहेतुवर्यः परिणाम इव पलितरूपेण शिरसिजजालममलीकुर्वन् गुणरूपेण तदेव परिणमयति।¹

वास्तव में आज का युवक भी उस चौराहे पर खड़ा है, जहाँ किस दिशा में जाए, क्या शिक्षा प्राप्त करे, क्या नौकरी प्राप्त करें। इस दिग्भ्रम में ही वह अपने जीवन का बहुमूल्य समय - खो देता है। ऐसे में मंत्री शुकनास आशा की किरण लेकर पहुँच कर समझाते हैं कि विषयों के भोगबहुत अच्छे प्रतीत होते हैं, परन्तु उसका आस्वादन सीमित मात्रा में ही होना चाहिए-

इन्द्रियहरिणहारिणी

च

सततमतिदुरन्तेयमुपभोगमृगतृष्णिका।
नवयौवनकषायितात्मनश्च सलिलानीव तान्येव
विषयस्वरूपाण्यास्वाद्यमानानि मधुरतराण्यापतन्ति
मनसः। नाशयति च दिक्षोह इवोन्मार्गप्रवर्तकः
पुरुषमत्यासङ्गो विषयेषु।²

मंत्री शुकनास दिग्भ्रमित युवावर्ग को समझाते हुए कहते हैं कि विषय तो मधुरतर हैं लेकिन अपनी बुद्धि को, अपने विवेक को सर्वत्र आलोकित करना है, क्योंकि युवावस्था के आरम्भ में शास्त्रों के अध्ययन से निर्मल हुई बुद्धि भी प्रायः कलुषित हो जाती है और युवकों की दृष्टि राग से युक्त हो जाती है। यथा -

यौवनारम्भे च प्रायः शास्त्रजलप्रक्षालननिर्मलापि
कालुष्यमुपयाति बुद्धिः। अनुज्ञितध्वलतापि सरागैव
भवति यूनां दृष्टिः। अपहरति च वात्येव शुष्कपत्रं
समुद्भूतरजोन्नान्तिरतिदूरमात्मेच्छ्या यौवनसमये पुरुषं
प्रकृतिः।³

वास्तव में चन्द्रापीड़ आज के युवावर्ग का प्रतिनिधि है, परन्तु मंत्री शुकनास की समस्त बातों को, उपदेशों को आत्मसात् करने की क्षमता भी रखता है।

इसके माध्यम से मंत्री शुकनास स्पष्ट कर देते हैं कि हमारी युवा पीढ़ी बात को समझने, परखने एवं अपनाने में अति सक्षम है। वह पीढ़ी चाहे तो असम्भव को भी सम्भव कर सकती है।

मंत्री शुकनास द्वारा किया गया लक्ष्मीवर्णन आज के -दुर्गुण-मानव को धन रूपी पिशाच के मुख से किंचित् स्वतन्त्रता दिलाने में समर्थ हो सकता है, क्योंकि आज मनुष्य “उसकी आय मेरी आय से अधिक क्यों है? उसके पास बड़ी गाड़ी क्यों है?” इत्यादि बातों में ही अपने जीवन को व्यर्थ खोता है। मंत्री शुकनास इस बात को समझाते हुए कहते हैं-

न ह्येवंविधमपरमपरिचितमिह जगति किचिदस्ति,
यथेयमनार्या। लब्धापि खलु दुःखेन परिपाल्यते।
दृढगुणपाशसन्दाननिष्पन्दीकृतापि नश्यति।
उद्दामदर्पभटसहस्रोल्लासितापिजरविधृताप्यपक्रामति
। मदजलदुर्दिनान्धकारगजघटितघनघटापरिपालितापि
प्रपलायते।⁴

अर्थात् धन क्षणभंगुर है। इसका अभिमान व्यर्थ है। सद्योनिमीलित जुगनू की चमक की भाँति अचिरस्थायी है, अतः उसके पीछे भागना व्यर्थ है। यथा -

न परिचयं रक्षति। नाभिजनमीक्षते। न रूपमालोकयते। न कुलक्रममनुवर्तते। न शीलं पश्यति। न वैद्यर्थ्यं गणयति। न श्रुतमाकर्णयति। न धर्ममनुरूप्यते। न त्यागमाद्रियते। न विशेषज्ञतां विचारयति। नाचारं पालयति। न सत्यमनुबृथ्यते। न लक्षणं प्रमाणीकरोति। गन्धर्वनगरलेखेव पश्यत एव नश्यति।⁵

अर्थात् लक्ष्मी के समस्त दुर्गुणवर्णन के द्वारा उन्होंने धन के पीछे न भागने का संकेत देकर आज के युवावर्ग को स्वकर्म और स्वधर्म में स्थिर रहने का महत्वपूर्ण उपदेश दिया है, जो आज के युवा में लुप्त होता जा रहा है। ऐसा प्रतीत होता है कि शुकनास भविष्यद्रष्टा थे, जिन्होंने आज के युग की सभी सम्भावित समस्याओं का अपनी त्रिकालातीत दृष्टि से अवलोकन कर लिया था।

इसके अतिरिक्त लक्ष्मी के प्रभाव से दुष्प्रभावित राजाओं के वर्णन द्वारा वे युवराज को राज्य में आने वाली सभी समस्याओं, यथाधूर्त - , चाटुकार, दृष्टों से सावधान रहने की शिक्षा देते हैं, जो आज के युग में उच्चपद पर विद्यमान या आगत युवाओं हेतु बहुत उपयोगी है। यथा-

तदेवं प्रायेऽतिकुटिलकष्टचेष्टासहस्रदारुणे राज्यतन्त्रे, अस्मिन्
महामोहान्धकारिणि च यौवने कुमार! तथा प्रयतेथा- यथा

नोपहस्यसे जनैर्न निन्द्यसे साधुभिर्न धिक् क्रियसे
गुरुभिर्नोपालभ्यसे सुहृद्धिर्न शोच्यसे विद्वद्धिः।⁶

उपसंहारवास्तव में आज के युग में नवीन उच्चपद प्राप्त होते - ही लम्पट एवं धूर्त व्यक्ति अपनी स्वार्थसिद्धि हेतु आसपास मंडराने लगते हैं। उनसे बचने का उपाय भी मंत्री शुकनास ने चन्द्रापीड के माध्यम से प्रस्तुत किया है।

वास्तव में शुकनासोपदेश वह त्रिकालातीत उपदेशमय ग्रंथ है, जो भूत, वर्तमान एवं भविष्य को संजोता हुआ, उनका समन्वय करता हुआ मानवजाति को, विशिष्टतया युवा पीढ़ी को प्रत्येक पग पर दिशानिर्देश करता है, ताकि युवा पीढ़ी अपने प्रगति पथ पर निर्बाध गति से बढ़ सके।

बाणभट्ट की काव्यशैली एवं वाक्यविन्यास के विशिष्ट वन्दन द्वारा सभी तथ्यों को मंत्री शुकनास ने स्पष्ट किया है।

सन्दर्भ

1. शुकनास .पृ० 50
2. वही, पृ० 45
3. वही, पृ० 42
4. वही, पृ० 63
5. वही, पृ० 65
6. वही, पृ० 109
7. शुकनासोपदेशः, डॉ० राकेश शास्त्री एवं डॉ० प्रतिमा शास्त्री, दिल्ली: विद्यानिधि प्रकाशन, 2001.
8. शुकनासोपदेशः, डॉ० प्रह्लादकुमारः, नई दिल्ली: महरचन्द लक्ष्मणदास पब्लिकेशंस, 2018.
9. शुकनासोपदेशः, डॉ० अर्चना त्यागी, भारतीय विद्या प्रकाशन